गुरु विरजानन्द दण्डी
पुस्तकालय
परिग्रहण क्रमांक 5319
दयानन्द महिला महा

[redacted] नासुख कुराने करीम और बाइबिल की रोशनी में

जवाब बनाम

मौलाना रामनगरी साहब

पास मुल्ला के नहीं कुछ मेरी हुज्जत का जवाब ।
हां मगर खुद साख़्ता इक फतवाए तकफीर है ॥

मुसन्निफ़ा हाफिज़ अताउल्लाह एकता
बारां जिला कोटा (राज०)

अशआर

हर काम जैसे होता है दुनिया का बार बार।
है मौतो ज़िन्दगी भी इसी तौर बार बार॥

कबरों में कुछ नहीं हैं, सुनो और सोच लो।
आवागमन से मिलता है फल सबको [redacted]॥

चक्कर में जैसे दहर का हर ज़र्रा हर घड़ी।
यूं मौतो ज़िन्दगी का तसलसल है लगातार॥

बदला है तनासुख़ में हर एक खैर व शरका।
इसके सिवा बतायें कोई अदल की तदबीर॥

अपनी ख़ाकिस्तर समुन्दर को है सामाने वजूद।
मर के फिर होना है पैदा यह जहाने पीर देख॥

महाकवि इक़बाल

हर नफ़स उम्रे गुजिश्ता की है मय्यत फ़ानी
ज़िन्दगी नाम है मर मर के जिए जाने का-

(फ़ानी)

हाफ़िज़ अताउल्लाह एकता
बारां (राजस्थान)

मुद्रक— भारत प्रिन्टर्स, मकबरा बाजार, कोटा—६

तमहीद

प्यारे दोस्तों और बुजुर्गों, आज मैं फिर आपको कुरआने करीम की रोशनी और इन्जील मुकद्दस में एक ऐसे पुराने भूले हुए रास्ते की याद दिला रहा हूँ, जिस पर हर इन्सान व हैवान अज़ल (आरम्भ) से अबद (अन्त) तक चलने के लिए हमेशा से मजबूर है, यानी आवागमन। इसीलिये मुस्लिम बुजुर्गों ने भी इस को अपनाया है। किसी ने दानिस्ताह जैसा कि अलबेरूनी नामक यात्री ने अपनी किताबे हिन्द में लिखा है, कि सूफियाए किराम की एक जमाअत ने तनासुख को तसलीम किया है।' और किसी ने नादानिस्ताह जैसा कि जनाब मिरजा गुलाम एहमद साहिब कादियानी की तहरीर (लेखों) में इसका सुराग़ जगह जगह यूं मिलता है।

शेर – मैं कभी अदम कभी मूसा कभी याकूब हूँ।
नीज़ इब्राहीम हूँ, नसले हैं मेरी बेशुमार॥

फिर मसीह व कृष्ण अलैहिंमुस्लाम के रूप धारण करने का तो आप का खास मिशन है, जो तनासुख के बगैर मुमकिन नहीं।

यह भी मुस्लिम जान ले, हिन्दु भी है एहले किताब
ईश्वरीय ज्ञान है, ब्रह्मा के यारों वेद चार।

दो शब्द

*

मुझे हाफ़िज़ अता अल्लाह साहिब एकता की इस छोटी सी पुस्तक को बड़े ध्यान पूर्वक पढ़ने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ है। यद्यपि यह पुस्तक आकार में छोटी है, परन्तु जिस पवित्र विचार को सन्मुख रखकर विद्वान लेखक ने, इसकी रचना की है, उस पवित्र भावना पर दृष्टि डालकर देखा जाये, तो पुस्तक राष्ट्र की एक बहुमूल्य सम्पति और महान सेवा है। फारसी भाषा के महाकवि ने बड़ी सुन्दर बात कही है-

"हर चेह बकामत केहतर बकीमत बेहतर"

अर्थात कई छोटे आकार की वस्तुएँ आकार से भले ही छोटी हों, परन्तु कीमत के आधार से वह बहुमूल्य वस्तु होती हैं। हाफ़िज़ साहिब ने हिन्दु मुसलिम एकता को बढ़ावा देने के लिए यह उत्तम प्रयास किया है, कि कुरआने मजीद के सम्बन्ध में फैली भ्रान्ति का निवारण करके, हिन्दू तथा मुसलिम विद्वानों को धार्मिक दृष्टि से एक दूसरे के विचारों को सचाई के साथ समझने का अवसर मिल सके, अतः मैं ऐसे शुभ प्रयत्न पर लेखक का बड़े प्रेम से स्वागत तथा धन्यवाद करता हूँ।

देश सेवक

कविराज पं० रामलाल भाटिया

'कुरान मार्तण्ड', कोटा (राजस्थान)

जो दुनिया में अंधा है वह आखरत में भी अंधा है

सबसे पहले इस सिलसिले में पारा १५ रुकु७ वाली आयत की तरफ ध्यान दीजिये—

"तुर्जुमा" जो इस दुनिया में अन्धा है, वह आखरत में भी अन्धा हैं, और बहुत बहकने वाला है रास्ते का।

आयत के ३ जुमले हैं, जिसकी तशरीह खुद मुफ़स्सिरीन हज़रात ने यूं की है। पहले जुमले के अंधे से मुराद इन्सान की गुमराही और बेदीनी है, और दूसरे अंधे से मुराद उसको जाहिरी बीनाई से माहरूम करना है, जो आखरत में बतौर सज़ा होगी। यह बिल्कुल दुरुस्त है, क्योंकि जिसने दुनियां में गुमराही के काम किये, उसे आखरत में बतौर सज़ा अंधा बनाना एक इन्साफ़ है। इस पर मैंने उलमाय कुरआन से यह सवाल किया था, कि जब कुरआन के मुताबिक अन्धे पन की सज़ा आखरत के साथ मखसूस है, तो मेरे जैसे लाखों अन्धे इस दुनिया में क्यों भटक रहे हैं। बदीं वजह मैं इस नतीजे पर पहुंचने में मजबूर हूँ कि यही दुनिया और इसी दुनिया के दूसरे पहलू का बातनी नाम आखरत है क्योंकि लुगत में आखरत हर पीछे आने वाली चीज को कहते हैं और यह बिल्कुल दुरुस्त है क्योंकि हर पैदायश हमारी पहली पैदायश से पीछे हैं. जिसका साफ नतीजा यह निकला कि हर जानदार को जन्म मरन से बार बार दोचार होना पड़ता है।

इसका जवाब मौलाना राम नगरी साहब ने बड़े जलाल में आकर यह फरमाया कि अन्धा समझता नहीं और हिन्दु शास्त्रों

का सहारा लेकर आप लिखते हैं कि बच्चे का अन्धा होना हमल की खराबी या और तरह तरह की किसी बीमारियों का नतीजा है, हालांकि मेरे तनासुख़ के सबूत में पेश करदा दलायल (युक्तियों) का हिन्दू शास्त्रों के साथ कोई सम्बन्ध नहीं, फिर उनका ज़िकर बिल्कुल व्यर्थ है। दूसरा जवाब यह है कि जब यह दुनिया दारूल असबाब है, तो फिर बकौल आपके कोई भी काम खुदा के हुक्म से ही हो रहा है, क्योंकि कोई बात बगैर सबब के वजूद में नहीं आ सकती, यहां तक कि मौत भी किसी बीमारी या नागहानि हादसे के बगैर मुमकिन नहीं, हालांकि कुरआन के मुताबिक हर जानदार के लिए मौत का एक वक्त मुकर्रर है जो आगे पीछे नहीं हो सकता, ठीक इसी तरह अन्धों का अन्धापन किसी न किसी बीमारी और सबब का शिकार है और साबिका बद एमालियों का कुरआन के मुताबिक नतीजा भी है, और इन दोनों बातों में कोई अन्तर नहीं।

शेर–आवागमन नहीं है तो जालिम है फिर खुदा।
उसका है क्या कुसूर जो अन्धा है जन्म का॥

एकता

(ईमाने मुफस्सल की तशरीह)

मैं ईमान लाया खुदा पर, व उसके फरिश्तों पर, और उसकी किताबों पर, उसके रसूलों पर, और पिछले दिन पर, अच्छी बुरी तकदीर पर जो मिन जानिबे अल्लाह है, और मरने के बाद लौटाये जानेपर इसकी तशरीह मैं अपनी पहली आवागमन वाली किताब में कर चुका हूँ। सबसे पहले ईमाने मुफस्सल में काबिले गौर बात यह है, कि इसमें पिछले दिन को दो बार

दोहराया है और बीच में मसले तक़दीर भी रख दिया गया है, जिसकी तरतीब निहायत ही माकूल और क़ाबिले गौर है। गौर से पढ़िये, अरबी जबान में आख़र और आख़रत को दो बार इस्तेमाल किया गया है। एक माज़ी के लिए और दूसरी मुस्तक़बिल के लिए, लेकिन आम लोग इसका माना (अर्थ) यह न ले के मफ़रूज़ा क़यामत का लेते हैं। इसके लिए देखिये। सूरते सुवाद रुक १ तजुमा—हमने यह बातें पहले अदयान (धर्मों) में नहीं सुनी। इस आयत में लफ़्ज़ आख़रत है, मगर यहां मुस्तक़बिल के के लिये नहीं, बल्कि इसलाम से पहले वाले दीनों के लिए बोला गया है, ठीक इसी तरह ईमाने मुफ़स्सल में पहली आख़रत का मतलब यह है कि ईमाने मुफ़स्सल पढ़नेवाला यह भी समझ ले कि मैं जमाने माज़ी से मौत व ज़िन्दगी से दो-चार होता चला जा रहा हूं और बीच में तक़दीर का मतलब यह है कि हमको जो अच्छा बुरा पेश आ रहा है यह सब आमाले साबिक़ा का नतीजा है और पिछला दिन और मुरदों का जीना कोई दो-दो बात नहीं. क्योंकि क़यामत में सबसे पहले मुरदों का जी उठना ही है।

पस ईमाने मुफ़स्सल पढ़ने वालों से मैं पूछ रहा हूं कि इसमें आख़रत को दो बार क्यों दोहराया गया है। फिर दोनों के बीच में तक़दीर पर ईमान लाना ज़रूरी क़रार दिया है, जिसका तनासुब से लाज़िम मलज़ूम का सम्बन्ध है। नीज़ यह कि जो कुछ हमें मिल रहा है, गुज़िश्ता आमाल का नतीजा है, और अब जो कुछ कर रहे हैं, इसका नतीजा आगे निकलेगा। मोहतरम रामनगरी साहिब सूरह स्वाद रुकू १ वाली आख़रत को पेशे नज़र रखें।

अशआर

आगे पीछे आखरत है बीच में तकदीर है।
बीच में दो मौत के इक जिन्दगी तामीर है॥
यानी तेरी जिन्दगी हर जिन्दगी है आखरत।
बल्कि हर हर सांस तेरा हशर की तस्वीर है।
जिन्दगी है मौत है फिर जिन्दगी है बार बार।
ठीक ईमाने मुफ़स्सल की यही तफ़सीर है॥
है यह ईमाने मुफ़स्सल से अयाँ फिर देखले।
आगे पीछे आख़रत है बीच में तकदीर है॥
राज़ ईमाने मुफस्सल का है बस आवागमन।
बेसिरा यह जिन्दगी और मौत की जंजीर है॥
है अज़ल से ता अबद यह सिलसिला मौतो हयात।
जिन्दगी मिटती नहीं इकबाल की तेहरीर है॥

एकता

अशआर

समझता है नादां इसे बेसुबात। उभरता है मिट मिट के नक्शे हयात॥
अजल इसके पीछे अबद सामने। न हद इसके पीछे न हद सामने॥

(साकीनामा इकबाल)

यहीं बहिश्त भी हैं हूरो जिब्राइल भी हैं।
तेरी निगाह में अभी शोखिए नज्ज़ारा नहीं॥
मर के टूटा है कहीं सिलसिलये कैदे हयात।
फर्क इतना है कि ज़ंजीर बदल जाती है॥
पास मुल्ला के नहीं कुछ मेरी हुज्जत का जवाब।
हाँ मगर खुद साख्ता इक फतवाए तकफीर है॥
एक ताई ईज़म में अदयाम सारे एक हैं।
कुछ लुग़त का फेर है कुछ फैहम की तकसीर है॥

एकता

६

कुरआने करीम के मुतबिक तनासुख और तकदीर लाजिम मलजूम है।

जिस की तारीह गौर से पढ़िये, तकदीर पर हम सब मुसलमानों का पूरा ईमान और अकीदा है लेकिन मौलवी साहिबान ने आज तक यह बतलाने की तकलीफ नहीं उठाई कि तकदीर बनती कैसे है। क्या खुदाय तआला किसी को अंधाधुन्ध, अन्धा, लंगड़ा, लूहला, बेहरा, गुंगा, गरीब, अमीर, मर्द, औरत, आलिम, जाहिल बनाता रहता है, ऐसा हरगिज नहीं, क्योंकि वह जगह-जगह यह फरमा रहा है, कि मैं अपने बन्दों पर जालिम नहीं। इस आयत के होते हुए तकदीर को पहले एमाल का नतिजा न

समझना कुरआन का आला चोटना है ।। इस के मा सिवा कई और आयते कुरआनी में वजाहत के साथ (खोल कर) बताया जा रहा है, इसके लिये देखिये पारा ५ रुकू २ मरदों के लिये नसीब यानि हिस्सा उन की कमाई का है, और औरतों के लिये उनकी कमाई का हिस्सा है। यह तो हम सब जानते और मानते हैं, कि बच्चे पर अपनी मां के पेट से बाहिर आते ही हम नर मादा का हुकम लगा देते हैं, और हर दो का नसीबा दोनों पर लगता है। जिसमें विरासत और अकीके जैसी बातों पर खुद शरीयत ने तफरीक करदी है। जिस का लाजमी नतिजा यह निकला, कि मरद औरत भी अपने पहले कर्मों के सबब से बनाये जाते हैं, और याद रहे कि यह आयत आईन्दा के लिये नहीं, बल्कि इसमें मरद-औरत बनने का कारण बतलाया गया है। क्यों कि दोनों के लिये फेल माजी बोला गया है। जिसका सम्बन्ध पैदायश के पहले वाले जमाना से है। मैं यह नहीं कह रहा कि मौजूदा आमाल के लिये छूट है। मगर इस आयत में जमाने माजी पर खास तौर पर रोशनी डाली गई है। क्योंकि पैदायश के फौरन बाद अमल की कोई गुन्जाइश नही, फिर उनके हकूक में तफरीक कैसी ? सच है—

अमल से ज़िन्दगी बनती है जन्नत भी जहन्नम भी ।
यह खाकी अपनी फितरत में न नूरी है न नारी है ।।

(४) मौत के बाद ज़िन्दगी का तसलसल

कुरआने करीम के मुताबिक हर जानदार को मौत ज़िन्दगी

से बार बार दो चार होना पड़ता है। इसके लिए देखिये पारा ४ रुकू ६ —

तरजुमा हर जानदार मौत का मजा चखने वाला है।

यह आयत बहुत ही काबिले तशरीह है। क्योंकि इसमें जिस कदर ज़ाहिरी बीनी से काम लिया गया है। जाय अफ़सोस है जिसको इतना समझ कर आगे बढ़ गये कि हर शख्स को एक न एक दिन मरना पड़ेगा। हालांकि इस में यह बात भी गिरैमर के मुताबिक शामिल है कि हर जानदार को एक बार नहीं बल्कि बार बार मौत का मज़ा चखना पड़ता है। क्योंकि ज़ायकतुन सीगा इसमें फायल का है। जो अरबी लुग़त के मुताबिक तीनों ज़मानों के के लिए बोला जाता है। जैसे कातिल, काजी आदिल. हाकिम, राज़िक वगैरा हर जमाने के लिए बोले जाते हैं। हालांकि हर एहले इलम के नज़दीक ग्रेमर के मुताबिक कातिल हर वह शख्स है, जो किसी भी ज़माने में इस फेल का इरतकाब करें। फिर जबकि ज़ायकतुन भी मुन्दरजा बाला मिसालों में से एक है, फिर इसका सम्बन्ध तीनों जमानों से क्यों नहीं, जिसका लाज़मी नतीजा यह हुआ कि हर जानदार सिरफ़ मुस्तकबिल ही में नहीं, बलकि माजी से मौत ज़िन्दगी से गुज़रता चला आ रहा है। बिल आखर इसी दुनिया में जिसका दूसरा नाम आखरत और कयामत भी है। अपने अच्छे बुरे कर्मों का फल पाता रहता है। और बस।

शेर- महशर यहीं है हशर का माना है इजतमा।
जारी हैं यहाँ खिलवतो जलवत के दसातीर॥

(५) कुरआने करीम के मुताबिक यह दुनिया ही कयामत है।

सबसे पहले इसके लिए देखिये, (सूरते फातहा) तरजूमा –

खुदा मालिक हैं इन्साफ़ के दिन का

आम तौर पर शारेहीन कुरआन ने तो यह समझा है कि अब से लाखों करोड़ों सालों बाद एक ऐसा दिन आयेगा, जिसमें जुमला इन्सान व हैवानात का हिसाब किताब होगा। फिर अजीब बात यह है कि यह भी कहते हैं जानवरों पर शरीयत लागू नहीं। फिर मालूम नहीं उन विचारों से हिसाब कौनसी आयत के मातहत लिया जावेगा। खैर यह तो ज़िमनी बात हैं। यहां असल सवाल यह है कि जब कयामत का दिन अभी मौजूद नहीं तो खुदा किस का मालिक है? हालांकि पारा १४ रुकू १२ में इरशादे बारी है।

तरजुमा उस खुदा के लिए दायमी इन्साफ है।

इस आयत और इस जैसी बहुत सी आयात के होते हुए किसी अलग थलग दिन का इन्तजार करना कोई समझ की बात नहीं। और लीजये सूरते रूम रुकू ३ में यूं इरशादे बारी है। तरजुमा। उस खुदा के निशानों में से आसमानों जमीन का कयाम है। एहले इलम पर पोशीदा नहीं, कि कयाम और क्यामत ही से फेल तकूमो निकला है। जिसके मायने (अर्थ) खड़ा होने, ठहरने और हर किस्म के काम अन्जाम देने का है, फना होने का नहीं। जिसका मतलब यह हुआ कि जब से आसमानों जमीन कायम

होकर अपनी अपनी ड्यूटी पर लगे हुए हैं। कयामत है और इनमें बसने वाले इसी कयामत में से गुज़र रहे हैं, और देखिये पारा २५ सूरते जासिया रूकू ३ (तरजुमा) और पैदा किये खुदा ने ज़मीनों आस्मान सचाई के साथ और ताकि बदला दिया जाये हर जानदार को उसके अमल का इस आयत में २ और २ चार की तरह यह बात बतलाई जा रही है, कि आसमानों जमीन खुदाय ताला ने बदला देने की खातिर बनाये हैं। तो फिर बदले के लिए हम किसी और आसमानों, जमीन और किसी अलग दिन की क्यों तलाश करें। यह अलग बात रही कि हमारे मौलवी साहिबान के पारा १० सूरत हज रूकू १ का तरजूमा और बेशक वह घड़ी आने वाली है, जिसमें शक नहीं तहकीक खुदाये ताला कबरों में पड़े रहने वालों को उठाकर भेजता रहता है।

इस आयत से यह समझना कि यह दुनिया बदला गाह नहीं बल्कि बदले की घड़ी कभी आने वाली है सरासर नादानी है। क्योंकि इस आयत में भी ज़ायकतन की तरह एक लफज़ आतेयतुन है जो तीनों जमानों के लिए बराबर बोला जाता है। इसलिए यह तरजूमा भी दुरुस्त है कि कयामत आ चुकी हैं और आई हुई है और सिरफ आयेन्दा पर उठा रखना कुरआन का १ तिहाई मतलब है और कबरों में निकलना भी मुसतकबिल के लिए कुछ खास नहीं। क्योंकि जब इसी हाल के लिये भी बोला जाता है, और देखिए सूरत मुआरज पारा २१ रुकू १ तरजुमा तहकीक वह मुनिकर उस दिन को दूर समझ रहे हैं और हम उसे करीब देख रहे हैं। करीब का यह मतलब तहीं की थोड़ी देर बाकी है, क्योंकि पारा १४ में इसके लिए करीब से बढ़कर अकरब बोला गया है। जिसका मतलब हाज़िर व मौजूद के सिवा कुछ नहीं हो

सकता। सच है-

पेश कर ग़ाफिल अमल कोई अगर दफतर में है ॥
यह घड़ी महशर की है तू अरसये महशर में है।

इकबाल

जहां में एहले ईमां सूरते खुरशीद जीते हैं।
इधर निकले उधर डूबे, उधर डूबे इधर निकले ॥

किया जन्नत में शरीयत लागू होगी या नहीं

अगर जवाब नफी में है तो कौन सी आयत के मातेहत है लेकिन मेरा जवाब इसबाती शकल में गौर से पढ़ें। सब से पहले जब हम कुरआने करीम में हजरत आदम का किस्सा पढ़ते हैं तो यह बात हमारे सामने आती है कि तुम यह चीजे खाना, लेकिन इस दरखत से बचे रहना। अब राम नगरी साहिब फरमायें कि शरीयत किसे कहते हैं और सुनये क्या जन्नत वाले हूरों से हम बिस्तर होकर कभी गुसल भी करते या नहीं। अगर नहीं तो हमेशा बेगुसली की हालत में खुदा की तसबीह करते रहेंगे और अगर गुसल करेंगे तो आयते कुरआनी के ऐन मुताबिक होगा। इसी का नाम शरीयत है। क्योंकि शरीयत अवामिरो व नही के सिवा और कुछ नहीं। बिल आखिर अगर जन्नत में शरीयत है और यकीनन है तो रामनगरी साहिब बतलायें कि फिर इस दुनिया और जन्नत में फर्क क्या रह जायेगा.

शेर—यहीं बहिश्त भी है हूरो जिब्राईल भी है।
तेरी निगाह में अभी शोखिये नज्ज़ारा नही ॥

सवाल नं० १

अगर आवागमन दुरुस्त है तो १४०० बरस से आज तक किसी ने इस पर रोशनी क्यों नहीं डाली ?

जवाब नं० १

किसी का यकीन के साथ यह कह देना कि इस पर किसी ने रोशनी क्यों नहीं डाली, दुरुस्त नहीं, क्यों कि १४०० बरस के सारे मुसलमानों का लिट्रेचर किसी के पास नहीं। इसके सिवा जबकि इसकी सैकड़ों आयाते कुरआनी और हदीसे ताईद कर रही है, तो फिर इस पर परदा कैसे डाला जा सकता है। फिर भी मेरी एहले इलम हजरात से दरख्वास्त है कि अगर कुरआने करीम में से तनासुख के खिलाफ सिरफ़ एक आयत बतला दें, तो मैं इस मज़मून से कुल्यातन दस्त बरदार हो जाऊंगा।

(सवाल नं० २)

जुमला उलमाये इसलाम यह बात खूब जानते हैं और मानते हैं कि कुरआन अपने किसी दावा को बेदलील नहीं मनवाता, बदीं वजह जरूर है कि उसने मशहूर कयामत पर कुछ दलायल भी दिए होंगे, लेकिन मैं जब उन दलाईल पर गौर करता हूँ तो वह मफ़रूज़ा कयामत पर नहीं बल्कि सारे के सारे तनासुख पर लागू होते हैं। लिहाजा फिर गौर की जरूरत है. क्योंकि कुरआन बार बार गौर और फिकर की दावत देता है।

(सवाल नं० ३)

अगर १४०० बरस में किसी ने तनासुख नहीं समझा हो

फिर तारीखे इस्लाम और शाह अब्दुल अजीज साहिब मरहूम देहलवी ने अपनी किताब तोहफा में क्यों लिख दिया है कि शिआ का एक फिरका है जो तनासुख का कायल है बिल आखिर मौलाना रुम जैसे रूहानी शाइर की मसनवी शरीफ में भी इसी का सुराग मिलता है।

अशआर मसनवी रूमी

१ हफत सद हफताद कालिब दीदा अम-हम चू सबजा बारहा रोईदा अम।

यह शेर मैं बचपन से सुनता चला आ रहा हूँ।

२ मन बसूरत गर चेह आदम जादा अम्-मन ब मानी जद्दों जद रफतादा अम्।

३ सद हजारा हशर दीदी ऐ अनूद-ता कुनूं हर लैहजा अज बुदबे वजूद।

वगैरा बहुत से अशआर सबूते तनासुख में पेश किये जा सकते हैं।

१ तरजुमा न. १- मैंने सात सौ सत्तर ७७० कालिब (शरीर) देखे हैं, और घास फूस की तरह बार बार उगा और सूखा हूँ।

२ गो मैं इस वकत जाहिरी सूरत में आदम की औलाद में से हूं दर परदा आदम के दादा पड़दादा में से हूं।

३ ऐ मुखालिफ तूं लाखों हशरे नशर देख चुका है, लेकिन तुझे खबर नहीं अब तक हर घड़ी वजूद में से गुजर रहा है।

अब इन जैसे दरजनों अशआर को इलहाकी (मिलावट) कह करटाल देना दुरुस्त नहीं। अगर बिल फर्ज इलहाकी मान भी लिये

जायें तो राम नगरी साहिब के पास इस बात का क्या जवाब होगा कि कम अज कम यह मिलावट करने वाले तनासुख के कायल जरुर थे, वरना वह ऐसी मिलावट क्यों करते।

जहन्न और जन्म का मफहूम एक ही है

इस सिलसिले में सबसे पहली बात काबिले गौर यह है, कि शारिहीने कुरआन ने लफजे जहन्नम को अर्बी नहीं बल्कि अजमी माना है। इसी वास्ते इस को गैर मुनसरिफ़ पढ़ते हैं। इसके बाद इस पर लुगत वालों ने जैसे ग्मासुललुगात व फीरोजुल लगात ने कुए या जंगल का अर्थ लेकर हिन्दी करार दिया है, हालांकि हिन्दी में जहुन्नम का कोई शब्द नहीं, लिहाजा करीने कियास यह हुआ कि यह लफ्ज़ जन्म का मुअरिब और मुतरादिफ़ है। फिर इससे बढ़कर यह बात काबिले गौर और भी बन जाती है कि अकसर मकामात पर कुरआने करीम ने इसको जन्म ही के लिए इस्तेमाल किया है। बतौर नमूना इसके लिए देखिये सूरते मर्यम रुकू ५ तर-जुमा—

तेरे रब की कसम हम उन मजरिमों और शैतानों को इकठ्ठा करके जहन्नम के गिरद ऊधा मुंह करके हाजिर करते रहते है।

इसका मतलब यह हुआ कि खुदा मुजरिमों को कयामत के दिन जहन्नम में हाजिर नहीं करेगा बल्कि जहन्नम के आसपास अतराफ़ में जमा कर देगा। हालांकि यह बात किसी के नजदीक काबिले तसलीम नहीं, बदों वजह हकीकत इसके बर अकस है।

यहां तीन लफ्ज काबिले गौर हैं। १ हौल, २ जहुन्नम, ३ जासिया हौल का अर्थ चक्कर खाने और घूमने का है और जहन्नम का अर्थ जन्म और जासिया का अर्थ ऊंधा मुंह है, जिसका साफ मतलब यह हो गया कि खुदायताला मुजरिमों को जन्म के चक्कर में डाल ऊन्धा मुंह अर्थात जानवर बना देता हैं। इससे बेहतर तशरीह अगर किसी के पास है तो पेश करे। जिसमें लुगत और ग्रैमर की पूरी पाबन्दी हो, तो मैं आवागमन छोड़कर उसका मुरीद बन जाऊंगा।

एकता

(कुरआन और गीता का मिलान)

ये मजमून मेरे एक काबिल दोस्त बृजलाल "दिल" साहब बारानवी की कलम का नतीजा है। तरजुमा और मैं भेजा गया बनी आदम के बहतरीन अच्छे जमानों में एक जमाने में फिर दूसरे यहां तक मैं अब आया हूं। उसी जमाने में जिसमें में था। यह हदीस मुसलिम शरीफ की है जो खुतबाहे इलमी सफा पृष्ठ पैंतीस में दर्ज है जो दर हकीकत कुरआन से माखूज हैं जिसे आगामी एडीशन में पेश करूंग ।

श्लोक गीता—

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम ॥

जिसका अर्थ यह हुआ कि जब जब धर्म में कोई हानि, कमजोरी आती है तो मैं उसकी दुरूस्ती के लिए जनम लेता रहता

हूँ। अब नाजरीन को समझ लेना चाहिए कि मुनदरजा बाला हदीस और श्लोक एक ही बात कह रहे हैं। यानी इस हदीस का मतलब इसके सिवा और कुछ हो नही सकता कि मैं बार बार जन्म लेता रहता हूँ। जिसका लाजमी नतीजा यह निकला कि कुरान और गीता की एक ही तालीम है यानी आवागमन।

एक शेर—

एक शेर— इस देश में आबे ज़मज़म है,
गंगा है हिमालय का हिम है।
इक बाप के बेटे हैं दोनों,
इक हिन्दू है इक मुस्लिम है॥

—"दिल"

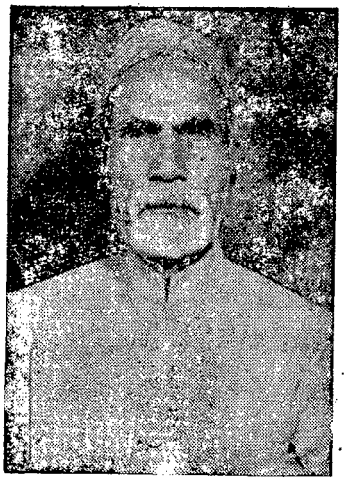

मुसन्निफा हाफिज
अता उल्लाह एकता
★
बारां जिला कोटा
(राज०)

बापूजी की शहादत

बापू की शहादत को सोच ज़रा मनसे ।
सोचेगा तो पायेगा इस भेद को जीवन से ॥
शिक्षा ने तेरी बापू सब भेदभाव मेटे ।
शूद्र से हरिजन शेखो ब्रह्मन से ॥
ऐ हिन्द पाक बालों तूम भूल गये उसको ।
आज़ाद किया जिसने अंग्रेज के बन्धन से ॥
तालीम से बापू की यह हिन्द लगा कहने ।
खाऊंगा खिलाऊंगा में एक ही बरतन से ॥
बापू की शहादत मैं रोऊंगा रुलाऊंगा ।
पापी ने मार डाला २ फैर में ठन ठन से ॥
करता है जो काम अच्छे पाता है फल अच्छे ।
मुक्ति का नहीं ठेका कुछ शेखो ब्रम्हन से ॥
मुसलिम के लिए तड़पा हिन्दू के लिए फड़का ।
फिर जान फिदा करके तू जा मिला भगवन से ॥
चरखे ने तेरे बापू योरोप को हिला डाला ॥
आखिर यह सदा आई आजाद हो लन्दन से ॥

मुसलिम के लिए तूने फिर मरन व्रत रखा ।
मिट जायेंगे हाँ हम भी इस देशपे तनमन से ।।

जेलों को तूने बापू बरसों बसा बसा के ।
फिर साज़ दिया हमको स्वराज्य के कंगन से ।।

बापू की शहादत पे सब देव मनुष्य रोये ।
रो रो के कहा सबने धिक्कार है दुश्मन से ।।

हर धर्म की रक्षा को अपना के कहा तूने ।
सच्चे हैं सभी अच्छे हम दूर हैं अन-बन से ।।

हम याद में बापू की करें शुक्र की छुट्टी ।
चाहे तो अगर माने यह अर्ज़ है शासन से ।।

भारत की एकता पे बापू ने उम्र काटी ।
जां दे हटा आखिर लेकिन न टला प्रण से ।।

राम नगरी साहब का एक धोखा

आप तहरीर फरमाते हैं कि इन आवागमन को मानने वालों से यह पूछते हैं कि आवागमन के मुताबिक मौत पहले है या जिन्दगी ? क्योंकि यह दोनों चीजें मुख़तलिफ़ होने के सबब से एक वक्त में जमा नहीं हो सकतीं। इसलिये इन दोनों में से जरूर एक पहले होगी। अगर वह कहें कि मौत पहले है तो फौरन यह सवाल पैदा होगा कि मौत तो जिन्दा चीजों को आती है। इसलिये आवागमन गलत है। और अगर कहें कि जिन्दगी है तो भी इस आवागमन की इमारत कायम नहीं रह सकती क्योंकि इन दोनों सूरतों में पैदायश की हद बन्दी हो जाती है।

(जवाब) आपने अपने ख्याल में आवागमन में मानने वालों को इतना बेवकूफ समझ रखा है कि आपके इस धोखे बाजी से हम आवागमन से दस्त बरदार हो जायेंगे। बस समझ लीजिये और खूब समझ लीजिये कि आवागमन के कायदे में मौत जिन्दगी कोई किसी से न पहले है और न पीछे क्यों कि यह सिलसिला कुरआने करीम के मुताबिक लामुतनाही है। इसके लिए देखिये पारा २४ सूरत मोमिन तरजुमा
उन्होंने कहा कि ए रब हमारे तूने हमें दो बार मारा और दो बार जिन्दा किया. क्या अब कोई निकलने का रास्ता है। इस आयत से दो और दो चार की तरह यह बात साबित हो रही है कि कोई किसी से आगे पीछे नहीं क्योंकि हर दो मौतों के बीच एक जिंदगी और हर दो जिन्दगी के बीच एक मौत है। और यह तसलसुल के बगैर मुमकिन नहीं और हो भी क्योंकर क्यों कि ख़ालिक़ बगैर मखलूक़ के बेकार और बेमाना ठहरता है।

ोर-

जबसे हैं खुदा तब ही से मखलूक है उसको।
मिलता है पता इस्से-हर एक शे के-किदम का॥

मेरे एक दोस्त बारां के अब्दुल सत्तार सा० की कोटे में ीड़ी वालों से एक अजीब बहस।

बीड़ी वालों ने अब्दुल सत्तार से पूछा क्या आपके यहां क हाफ़िज़ सा० हैं जो आवागमन के कायल हैं। उन्हें हमारे ास भेजना ताकि हम उनसे दो दो बातें करें और फिर उनको बबर लें।

अब्दुल सत्तार का जवाब

कि आप उनसे तो बाद में बातें करना पहले मेरे एक सवाल का जवाब दे दो। तुम्हारे मौलवी साहेबान का कहना है, कि कयामत के दिन खुदा तमाम मुर्दा इन्सानों व हैवानों को जमीन े आने वहिद में उठाकर अपने सामने हिसाबों किताब के लिये इकट्ठा करेगा। अब मेरा सवाल यह है, के तकरीबन जमीन र इस वक्त तीन अरब की आबादी है। और मरों हुओं की कोई तादाद नहीं। तो फिर अगर इन सब को एक वक्त में जिन्दा कर दिया तो वह इस जमीन में कैसे समायेंगे बल्कि इस जैसी और दस जमीनें भी बनादी जायें तो भी काफी नहीं हो सकती क्योंकि चींटी से लेकर हाथी तक से भी हिसाब लेना जरूरी है। हालांकि किसी जानवर पर दुनियां में कोई शारियत लागू नहीं थी। इसपर बीड़ी वाले बोले कि हमे क्या मालूम खुदा ही बेहतर जाने। फिर सत्तार ने कहा कि बस इसी पर कहते थे। के हम हाफिज जी से बहस करेंगे। इसके सिवा एक और संगीन सवाल यह भी पैदा होता है। इस कयामत वाली कचैहरी से तो वह

मालुम होता है कि खुदा दुनिया के जजों की मानिन्द कुर्सी पर बैठकर अदालत करेगा। हालां के यह बात अहले सुन्नत वल जमाअत के अकीदे के मुताबिक बिल्कुल गलत है। क्यों के इस अदालत में खुदा का शरीरधारी होना लाजिम आता है। जो किसी तरह मुमकिन नहीं।

शेर

जाहिदे तंग नजर ने मुझे काफिर जाना।
और काफिर यह कहता है मुसलमान हूँ मैं॥

इकबाल

अनाजील की रोशनी में तनासुख

जब हजरत मसीह अलेहस्सलाम ने तौरात की पेशीन गोई के मुताबिक अपनी रसालत व नबुव्वत का ऐलान किया, तो फौरन यहूदियों ने यह प्रश्न कर दिया कि अगर आने वाला मसीह तू है, तो फिर एलया कौन और कहां है? क्योंकि किताब के मुताबिक एलया का मसीह से पहले आना जरूरी है, हालांकि एलया को गुजरे उस समय तक करीबन १००० साल हो चुका था।

उत्तर

इस पर हज़रत मसीह ने जो उत्तर दिया वह काबिले गौर है जिसकी आंखें देखने की हैं, और जिसके कान सुनने के हों, सुनें क्यों कि एलया तो यह जकरिया का बेटा योहन्ना बिपतस्मा देने वाला है। अगरचि इस जवाब को यहूदियों ने तसलीम नही किया क्योंकि वह एलया को जाहिरी जिसमानी सूरत में आसमान से उतरते देखना चाहते थे, लेकिन हज़रत मसीह के कौल के मुताबिक इसका पूरा होना तनासुख के बिना सम्भव नहीं। अगर इस कौले मसीह का कोई अर्थ निकाला जा सके, तो पेश किया जावे।

गुरु विरजानन्द दण्डी
... पुस्तकालय
... ग्रहण सं.
दयानन्द महिमा म...
5319